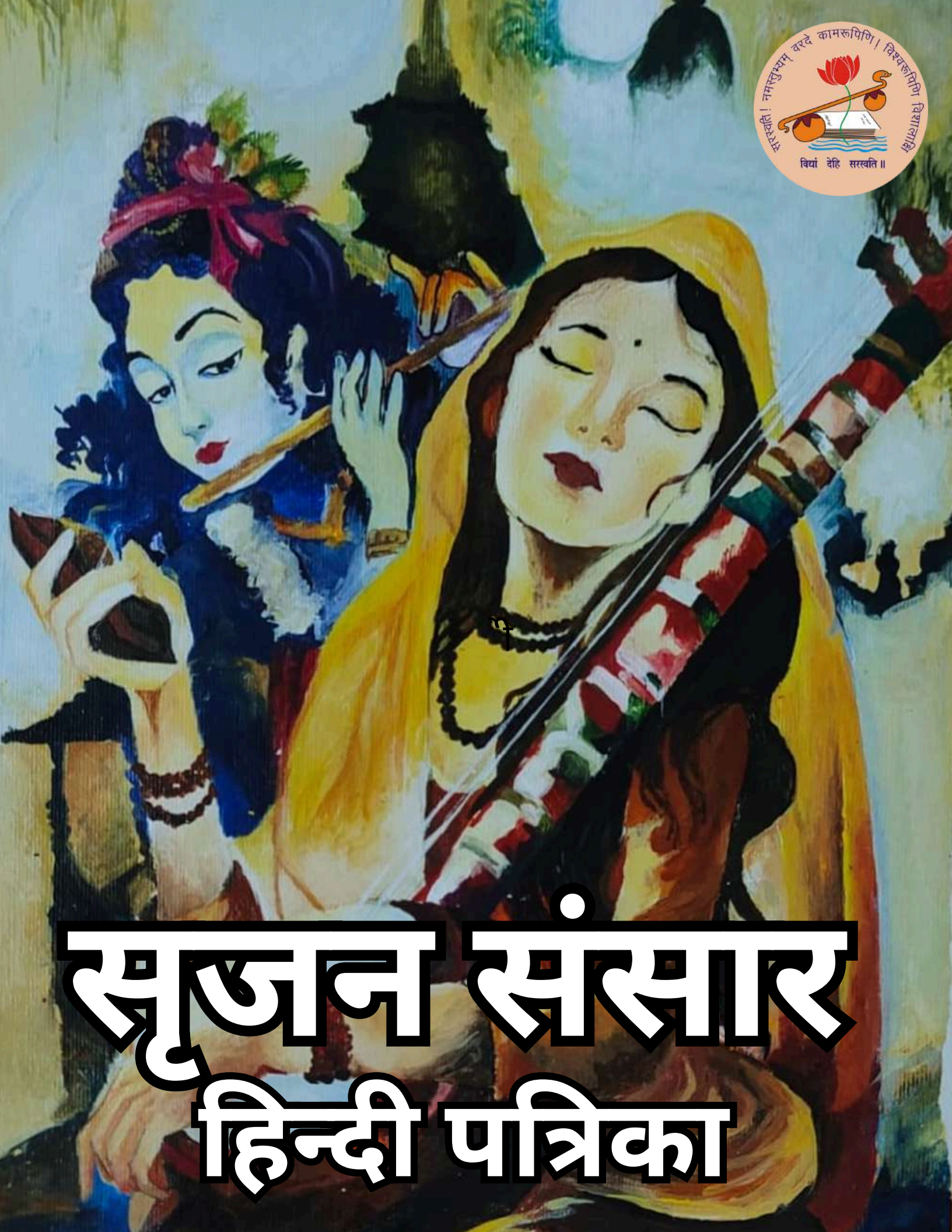
सृजन संसार
हिन्दी पत्रिका

# अनुक्रमणिका


१. संपादकीय

२.दिव्य प्रदर्शन

३. विद्यालयी प्रतियोगिता

४ .हिंदी दिवस

५ .अहिल्या बाई होल्कर

६. पृथ्वी दिवस

७. स्वच्छता पखवाड़ा

८.बच्चों की लेखनी

९. अध्यापक की कलम से

# संपादकीय

मनुष्य में जिज्ञासा की प्रवृत्ति जन्म से होती है। जिज्ञासा के चलते ही हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं। मनुष्य की इस प्रवृत्ति के कारण ही ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन प्रगति देखने को मिल रही है। ज्ञान के प्रति गहरी उत्सुकता मनुष्य को प्रगति के पथ पर अग्रसर करती है। आगे बढ़ने के लिए जरूरी है कि सब कुछ जब- जहाँ मिले सीखें।

हर कोई रचनात्मकता से भरा है। उन्हें बस अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने का तरीका खोजने की जरूरत है। यह पत्रिका विद्यार्थियों को एक मंच देती है। हिंदी विभाग की ओर से मैं अपने विद्यालय की निदेशिका श्रीमती लता वैद्यनाथन और प्रधानाचार्या डॉ श्रीमती मुदिता शर्मा जी का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों के रचनात्मक कौशल को उजागर करके प्रेरित किया। मैं उपप्रधानाचार्य श्री संजय भारद्वाज जी की आभारी हूँ जिन्होंने इस पत्रिका हेतु अपना एक लेख दिया। मैं सभी हिंदी शिक्षकों को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को बनाने में अपना योगदान दिया। मैं उन सभी विद्यार्थियों के साथ साथ उन सभी अध्यापकों के प्रयासों की प्रशंसा करती हूँ जिन्होंने अपने भावों को कलमबद्ध करके अपनी रचनाएँ पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु दी।

मैं अपने प्रिय छात्र शिवांग डागर को हृदय की अतल गहराइयों से आशीर्वाद देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ जिसने इस पत्रिका के संपादन में अपना संपूर्ण योगदान दिया।
पत्रिका सृजन संसार का ये दूसरा अंक है। सृजन संसार के कलेवर में निरंतर सुधार हेतु आप सभी के उपर्युक्त दिशा-निर्देश एवं परामर्श की कामना करते हुए आप सभी को यह अंक अर्पित है।

अर्चना तरार
हिंदी विभागाध्यक्षा

एक प्रबुद्ध व्यक्ति वास्तव में एक विशेष व्यक्ति होता है। विचारों को शब्दों में ढालने की क्षमता एक कठिन कौशल है, जिसके लिए समर्पित भाव के साथ सटीक शब्दावली और पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है। शब्द विन्यास के साथ सही वाक्य संरचना की जरूरत होती है।आपको लेखन की यह साधना तब करनी पड़ती है जब तक कि आप अपनी रचना को स्पष्ट रूप से पाठकों तक संप्रेषित न कर दें। बहुत कम लोग ऐसा करते हैं और उससे भी कम लोग इसमें पारंगत होते हैं। यह निर्माता और पाठक दोनों के लिए एक विशेषाधिकार प्राप्त संपत्ति है।

इसी प्रकार कहानी लिखना और सुनाना भी एक संवादात्मक कला है।कहानी लिखने और सुनने- सुनाने से कल्पनाशीलता बढ़ती है। कहानियाँ संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में मदद करती हैं।

मैं अपने सभी छोटे-बड़े कहानीकारों को इस चुनौती को स्वीकार करने और अपनी लेखनी का सोच-समझकर इस्तेमाल करने के लिए हार्दिक बधाई देते हुए अपना स्नेहिल आशीर्वाद देती हूँ।

अपनी प्रतिभा को अपने शब्दों के माध्यम से प्रतिबिंबित करें और पाठकों के मन को रोशन करें।

ढेर सारी शुभकामनाओं और आशीर्वाद के साथ

श्रीमती लता वैद्यनाथन
निदेशिका
ज्ञान भारती स्कूल

प्यारे बच्चों,

रचनात्मकता मन और हृदय दोनों को पोषित करती है। यह हमारी कल्पना को उड़ान देकर हमें स्वतंत्र, मुक्त और आनंदमयी अवस्था में लेकर आती है क्योंकि आप अपनी कल्पनाशक्ति से कुछ अनोखा सृजित करते हैं। वास्तविक शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान और अच्छे अंक प्राप्त करने का नाम ही नहीं है बल्कि यह आपके विचारों को अभिव्यक्त करने और रचनात्मकता की समृद्धि में निहित है। अभिव्यक्ति और सृजन की इस प्रक्रिया में ही आप सच्चे सुख का अनुभव करते हैं। रचनात्मकता आपकी कल्पना को प्रेरित करती है। वर्तमान समय की सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाते हुए सभी समस्याओं का समाधान खोजने में मदद करती है। यह खोजों और आविष्कारों को प्रेरित करती है जिससे हमारे अंदर खुशनुमा बदलाव आते हैं।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक बार कहा था, "रचनात्मकता बुद्धिमत्ता का आनंद लेना है।" अपनी रचनात्मकता को बड़े सपने देखने, गहराई से सोचने और अधिकाधिक हासिल करने के लिए मार्गदर्शन करने दें।

आपकी प्रतिभा का यह संकलन आपको और अन्य विद्यार्थियों को लिखने हेतु हमेशा प्रेरित करता रहेगा। खोज करके सृजन करना तथा सपने देखकर उन्हें पूरा करना जारी रखें - याद रखें,उड़ान पंखों के साथ-साथ हौसलों में भी होती है....

प्यार और आशीर्वाद के साथ,
डॉ (श्रीमती) मुदिता शर्मा
प्रधानाचार्या
ज्ञान भारती स्कूल

# दिव्य प्रदर्शन

दिनांक 28 अगस्त 2024 को दिल्ली पब्लिक स्कूल,मथुरा रोड में 44वीं डॉ विद्या टोपा स्मारक अन्तर्विद्यालयीय हिंदी वाद- विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसका विषय था- कृत्रिम बौद्धिकता (AI) मानव विकास के लिए वरदान है।हमारे विद्यालय की छात्रा सौम्या मान्ध्वानी (कक्षा - नौवीं A) ने विषय के विपक्ष में बोलते हुए प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। सौम्या को इस सफलता पर हार्दिक बधाई।

स्वतंत्रता दिवस के अंतर्गत होने वाले कार्यक्रम 'रूपक' में कक्षा बारहवीं के छात्र साय्योन नागपाल ने अपनी ओजस्वी वाणी में स्वतंत्रता पर अपने विचार प्रस्तुत करके सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। स्कूल उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

स्वतंत्रता दिवस की 78वीं वर्षगाँठ पर कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा मोयना गुप्ता ने तिरंगे झंडे के गौरवशाली इतिहास से सबको अवगत कराया।

दिनांक 27 जुलाई 2024 को  कालका पब्लिक स्कूल में विटपिक्स इवेंट के अंतर्गत काव्य उत्सव का आयोजन किया गया।कविता का विषय था 'पानी बचाने का करो जतन क्योंकि पानी है बहुमूल्य रतन'।
इस प्रतियोगिता में हमारे स्कूल की कक्षा आठवीं 'अ' की छात्रा अविआना चावला ने भाग लेकर अपनी स्वरचित कविता पढ़ी।अविआना चावला ने इस प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अविआना चावला को उनकी सफलता पर हार्दिक शुभकामना देते हुए विद्यालय उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

# विद्यालयी प्रतियोगिता

## देवराज दिनेश कविता प्रतियोगिता (कक्षा आठवीं हेतु) भाग लेने वाले विद्यार्थी....

| M3-A | M3-B | M3-C | M3-E |
|---|---|---|---|
| रेयांश<br>रेनेका<br>प्रतिमा<br>अविआना<br>दिव्य रंजन | इजयराज | मेधांश | देवर्या |

## अन्तरसदन कविता वाचन प्रतियोगिता विषय- वीर रस भाग लेने वाले विद्यार्थी....

| | | | |
|---|---|---|---|
| अभिमन्यु सदन<br>सौम्या मांधवानी | भरत सदन<br>अविआना चावला | ध्रुव सदन<br>मेधांश | कस्तूरबा सदन<br>सोहिनी बैनर्जी |
| लक्ष्मीबाई सदन<br>अंश अवस्थी | प्रहलाद सदन<br>अन्विता मिश्रा | श्रवण सदन<br>मोही मिश्रा | सिद्धार्थ सदन<br>आराध्या कुंदु |

# हिंदी दिवस

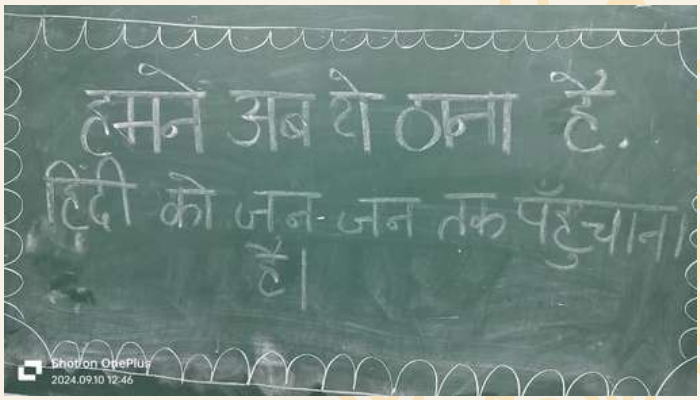


"हिंदी हमारी धरोहर, संस्कृति का अभिमान।
शब्दों में बसा है इसका,अद्भुत भावों का मान।
गर्व से ऊंचा रखें, इसका हरदम सम्मान ।
हिंदी से ही जुड़ी है, अपनी यह पहचान ।
आओ मिलकर प्रण लें ,हिंदी का हो सम्मान।
हर मन में बसाएं इसे,यह है हमारी पहचान।"
*स्वरचित (देवजा छाबड़ा)*

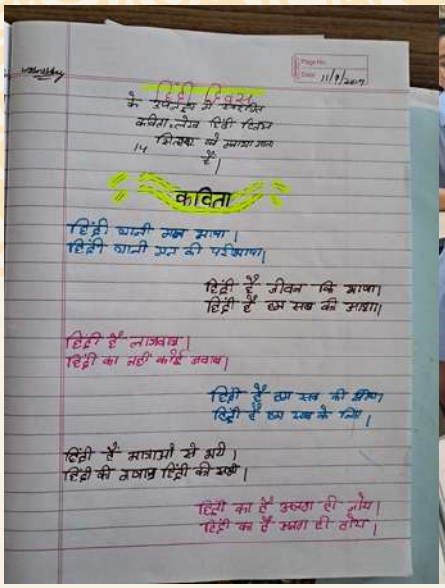


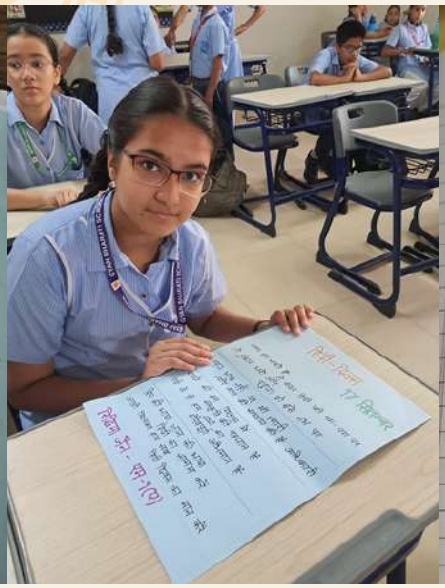

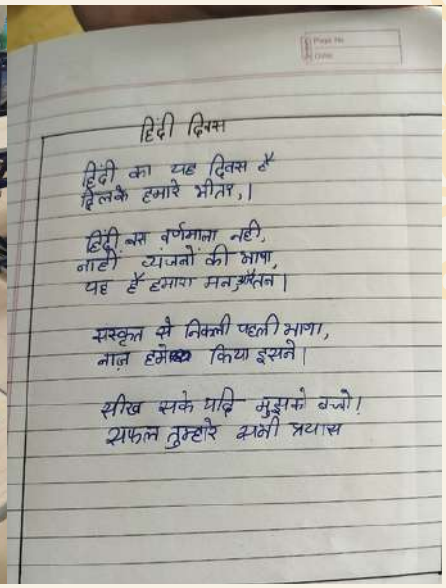

जन जन की भाषा है हिन्दी,
भारत की आशा है हिन्दी,
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है,
वो मज़बूत धागा है हिन्दी,
हिन्दुस्तान की गौरवगाथा है हिन्दी,
की अनुपम परम्परा है हिन्दी,
जिसके बिना हिन्द थम जाए,
ऐसी जीवन रेखा है हिन्दी,
सने काल को जीत लिया है,
कालजयी भाषा है हिन्दी,
शब्दों में कहा जाए तो,
की परिभाषा है हिन्दी।

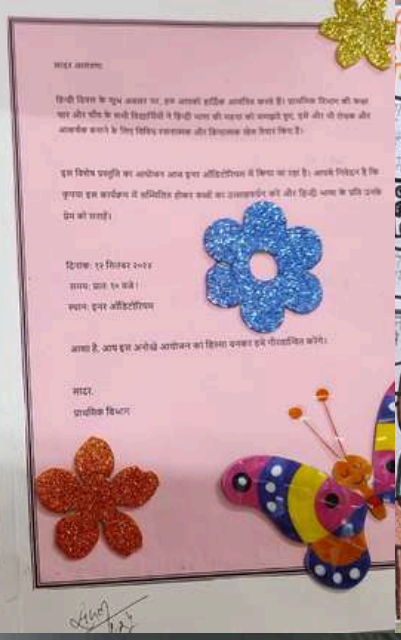

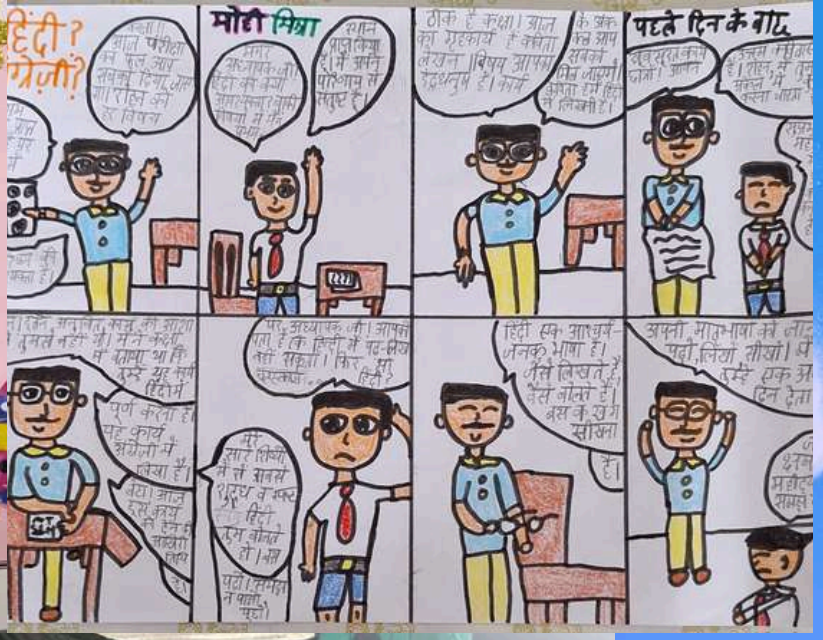


मोही मिश्रा
पहले दिन के बाद

१४ सितंबर
हिंदी दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ

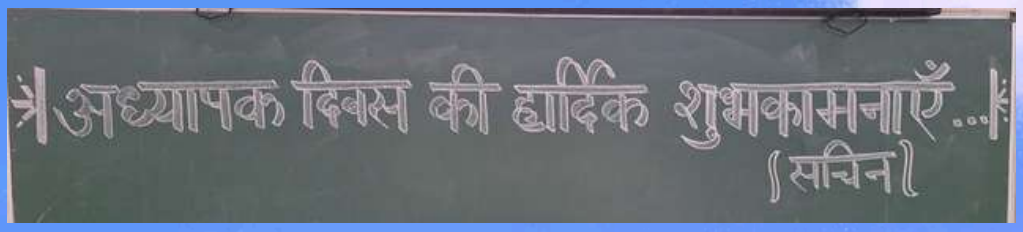


अध्यापक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ...
(सचिन)

शब्दों की साँप सीढ़ी
सूरज
धरती
घर
फूल

गाय
बहन
श्रीमती
ग्वालिन

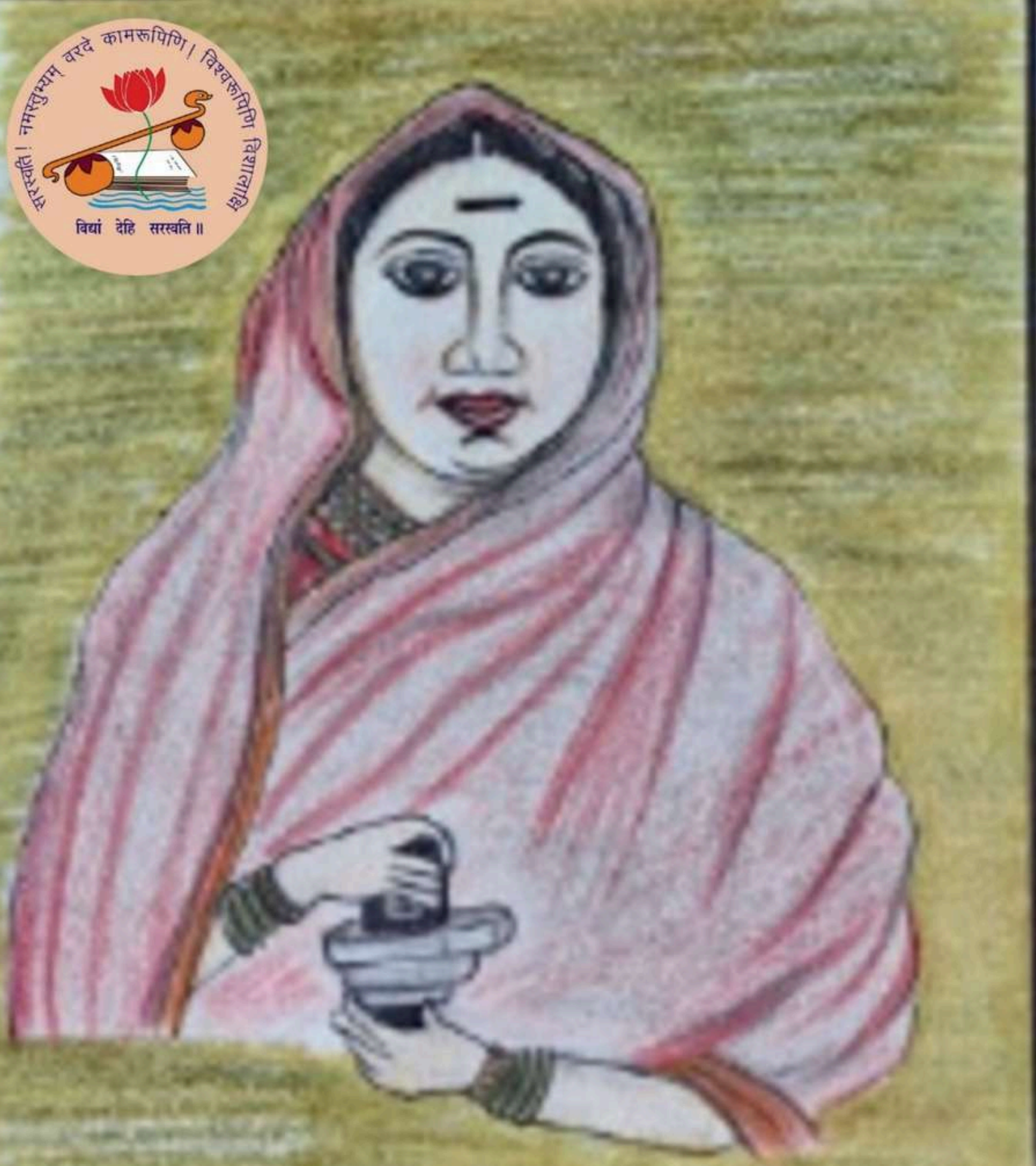


# अहिल्याबाई होल्कर विशेष

# लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर के 300वें जन्मदिवस पर एक प्रतिवेदन

लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर जी का 300वां जन्मदिवस ज्ञान भारती स्कूल में बहुत ही धूमधाम के साथ अनेक गतिविधियों द्वारा मनाया गया। बच्चों ने बड़े उत्साह से इन सभी गतिविधियों में भाग लिया और कक्षा में प्रस्तुत भी किया। उन्होंने छायाचित्र बनाकर भी लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। विद्यार्थियों द्वारा कविता लेखन तथा वाचन, अनुच्छेद लेखन, छायाचित्र/कार्ड एवं भाषण लेखन तथा वाचन की गतिविधियां मुख्य रूप से कक्षा में प्रदर्शित की गई। बच्चों ने पूरे मनोयोग से इसमें भाग लिया एवं लोकमाता होल्कर जी के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

ज्ञान भारती स्कूल

साकेत

# अहिल्या बाई की महिमा

अहिल्या बाई, रानी बड़ी दानी,
मालवा में बसीं, सबकी प्यारी रानी।
सच्चाई और धर्म का दिखाया पाठ,
सभी को सिखाया सच्चा आदर्श साथ।
मंदिर और घाट उन्होंने बनाए,
गरीबों की मदद से सबको संजीवनी दिखाई।
हर दिल में बसीं उनकी यह बात,
सच्चाई की राह पर चलाया उनका हाथ।
अहिल्या बाई, आप हो महान,
आपकी गाथा सबको है पहचान।
सच्चे दिल से सभी ने सराहा,
आपका नाम हमेशा याद किया जाएगा।

नाम: आल्या गौतम कक्षा : M 1-A

दिनांक 28 अगस्त 2024 को दिल्ली पब्लिक स्कूल,मथुरा रोड में 44वीं डॉ विद्या टोपा स्मारक अन्तर्विद्यालयीय हिंदी वाद- विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसका विषय था- कृत्रिम बौद्धिकता (AI) मानव विकास के लिए वरदान है।हमारे विद्यालय की छात्रा सौम्या मान्ध्वानी (कक्षा - नौवीं A) ने विषय के विपक्ष में बोलते हुए प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। सौम्या को इस सफलता पर हार्दिक बधाई।

Date........ Topic........

# अहिल्याबाई होल्कर

• हमारे देश के मराठा साम्राज्य के बहुत से वीर लोग हैं, जैसे छत्रपति शिवाजी, तानाजी, रानी लक्ष्मी-बाई, महारानी ताराबाई, आदि, और ऐसे ही वीर लोगों में शामिल होती हैं, महारानी अहिल्याबाई होल्कर। उन्होंने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत-भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में ~~मन~~ मन्दिर बनवाए, घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए-सुधरवाए, भूखों के लिए अन्नसत्र (अन्यक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाईं, मन्दिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिन्तन और प्रवचन हेतु की। और, आत्म-प्रतिष्ठा के झूठे मोह का ~~त~~ त्याग करके सदा न्याय करने का प्रयत्न ~~करती~~ करती रहीं - मरते दम तक। ये उसी परम्परा में थी जिसमें उनके समकालीन पूना के न्यायाधीश रामशास्त्री थे और उनके पीछे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हुईं। अपने जीवनकाल में ही उन्हें जनता 'देवी' समझने और कहने लगी थी। इतना बड़ा व्यक्तित्व जनता ने अपनी आँखों देखा ही कहा था। जब चारों ओर गड़बड़ मची हुई थी, शासन और व्यवस्था के नाम पर घोर अत्याचार हो रहे थे, प्रजाजन-साधारण गृहस्थ, किसान

Neelstar Designer

## एक वीरांगना

* मराठा की वीरांगना
चौण्डी की रण्चण्डी
रानी अहिल्याबाई थी
न्याय की मूर्ति
दया  का सागर
रानी  अहिल्याबाई थी

जन-जन की वह प्यारी
• रानी अहिल्याबाई थी
रानी अहिल्याबाई थी।
मातृत्व को सुप्त किया
लोरी गाकर जिसे सुलाया
उसी पुत्र को मृत्युइंड
का सजा सुनाया
इंदौर की वह धरा
आज भी गाता न्याय की वह गाथा
युग-युग जन-जन में प्रेरणादायनी
अहिल्याबाई की वह गाथा ।
बारंबार आँसू पोछ
• फिर उठ खड़ी होती अहिल्याबाई
पति की चिता  हो या पुत्र की चिता
फिर संभल उठती वह अहिल्याबाई
चट्टानों जैसा दृढ़
अटल विचारों वाली
वह वीरांगना अहिल्याबाई थी
आज भी नारी की प्रेरणादायिनी रानी अहिल्याबाई
नारी न थी कभी अबल
भारत की इस धरा पर
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवता, थी जन-जन की वाणी
वह दुर्गा का ही रूप अहिल्याबाई थी वह दुर्गा का ही रूप अहिल्याबाई थी।

अन्विता मिश्रा
M1-D

# शहीदों को नमन

करते हैं आज के दिन शहीदों को स्मरण,
जिन्होंने किए थे स्पर्श मृत्यु के चरण जिन्होंने देश के खातिर
गवाए थे अपने प्राण,
उन वीरों को हम करते हैं आदरपूर्ण प्रणाम।

देश की सीमा पर जो रहते थे डटे, देश के लिए हैथे जिनके सर
कटे, आजाद कराया देश को,
जब हम थे अंग्रेजों के गुलाम,
उन वीरों को हम करते हैं आदर पूर्ण प्राणाम

निधि - S1C

# रानी अहिल्या बाई

रानी अहिल्या बाई हिंदू मंदिरों की एक महान प्रणेता थीं उन्होंने पूरे भारत में सैकड़ों मंदिर और धर्मशाला बनवाईं। अहिल्या बाई का जन्म ३१ मई १७२५ को महाराष्ट्र के चौंडी गाँव में हुआ था। उनके पिता जी मानकोजी राव शिंदे गांव के पाटिल थे। रानी अहिल्या बाई होल्कर मालवा साम्राज्य की होल्कर रानी थीं। उन्हें भारत की सबसे दूरदर्शी महिला शासकों में से एक माना जाता है।

# पृथ्वी दिवस

पहला पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल, 1970 को मनाया गया और इसे आधुनिक पर्यावरण आंदोलन की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है। पृथ्वी दिवस अब 190 से अधिक देशों में मनाया जाता है, जिससे यह विश्व में सबसे बड़े धर्मनिरपेक्ष उत्सवों में से एक बन गया है। ज्ञान भारती स्कूल में भी हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पृथ्वी दिवस का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने विविध गतिविधियों द्वारा इस दिवस पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

पृथ्वी दिवस
हमारी धरती
धरती माता हमारी जीवन दाता,
इससे जुड़ा है सारे जहाँ का नाता।
जन्म हुआ यही हमारा जीवन भी सँवारा हमारा।
हमारी धरती बड़ी अपार, इसमें फैला सारा संसार

धरती को नहीं जरा भी अभिमान,
हमारी धरती बड़ी महान धरती के हम पर अनगिनत उपकार,
ये सब हैं धरती के परीपकार।
सुंदर-सुंदर बाग -बगीचे हैं धरती पर
खूबसूरत पर्वतों का नजारा है धरती पर,
नदियों की बहती धारा है हमारी इस धरती पर,
सारे रिश्ते-नाते हैं धरती पर, बड़े-बड़े महल और छोटे-छोटे मकान है इस धरती पर।

सान्वी कक्षा-नौवीं 'डी'

एक पेड़
माँ के नाम
एक पेड़
माँ के
नाम

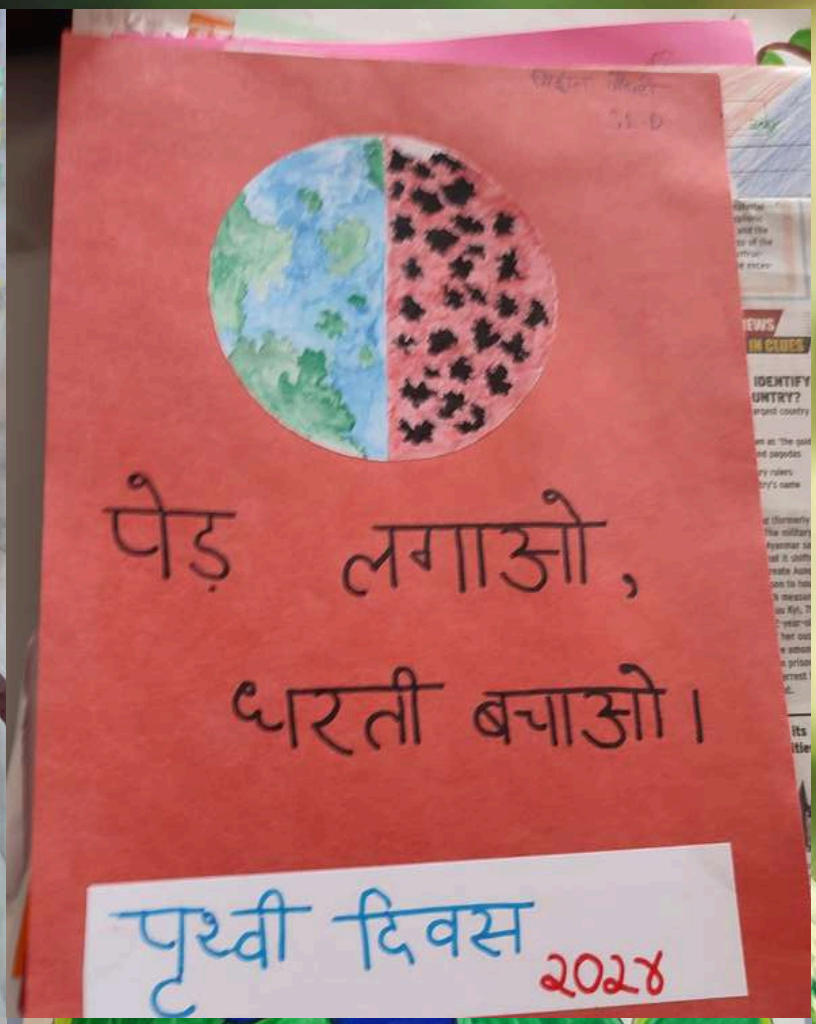
पेड़ लगाओ,
धरती बचाओ।
पृथ्वी दिवस 2024

पृथ्वी दिवस की शुभकामनाएं
जल ही जीवन है

पृथ्वी का करो जतन,
वही हमारी माता, वही हमारा वतन

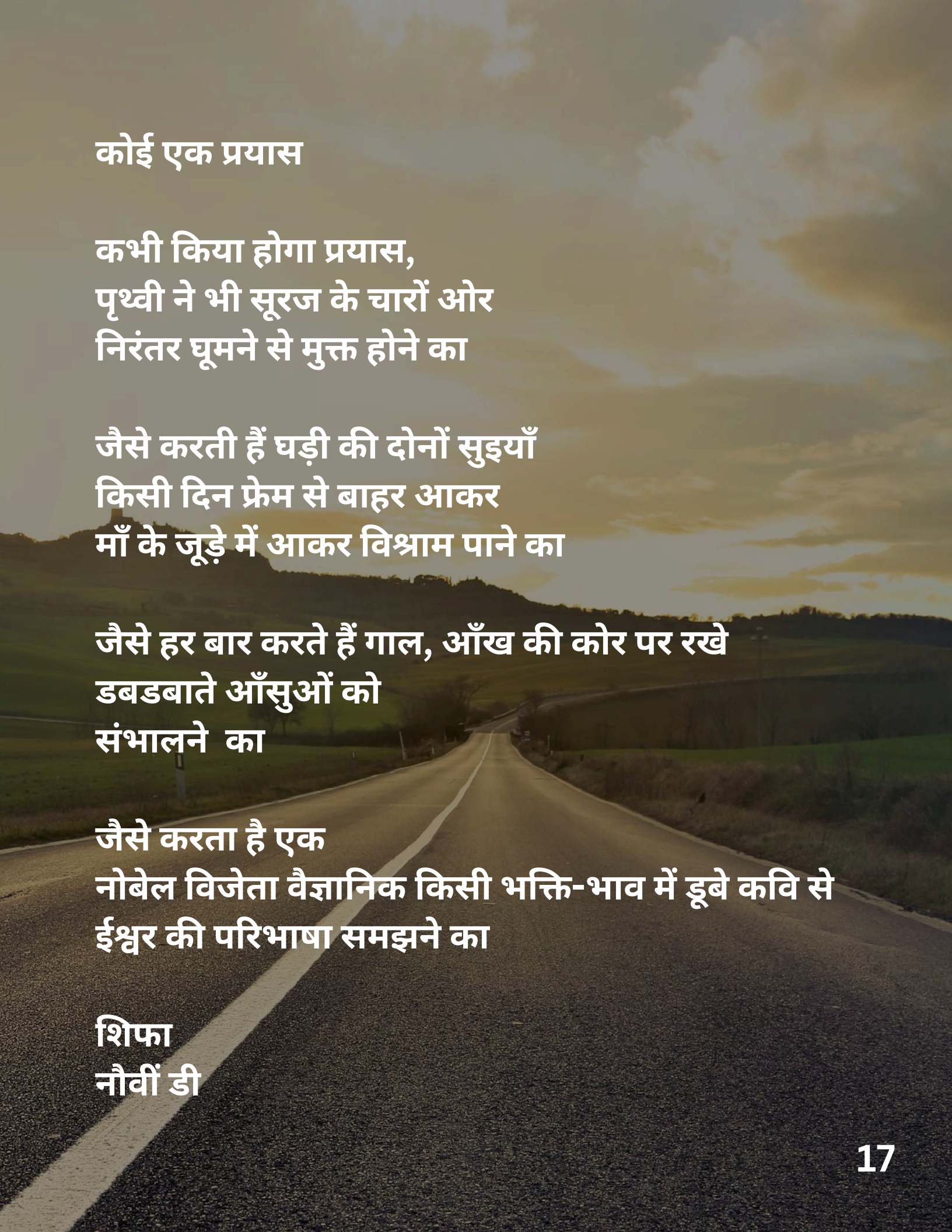

## कोई एक प्रयास

कभी किया होगा प्रयास,
पृथ्वी ने भी सूरज के चारों ओर
निरंतर घूमने से मुक्त होने का

जैसे करती हैं घड़ी की दोनों सुइयाँ
किसी दिन फ्रेम से बाहर आकर
माँ के जूड़े में आकर विश्राम पाने का

जैसे हर बार करते हैं गाल, आँख की कोर पर रखे
डबडबाते आँसुओं को
संभालने  का

जैसे करता है एक
नोबेल विजेता वैज्ञानिक किसी भक्ति-भाव में डूबे कवि से
ईश्वर की परिभाषा समझने का

शिफा
नौवीं डी

# पेड़ लगाओ;पृथ्वी बचाओ

पृथ्वी मेरी माँ है।
मैं उसे बचाऊँगा।।
मैं पेड़ लगाऊँगा।
जो पृथ्वी माता के हैं गहने।।

पेड जो वायु शुद्ध करते हैं। इंसानों का पेट भरते हैं।।
देकर अपने रस भरे फल।
देते हैं जंगल के हज़ारों जानवरों को घर

पृथ्वी मेरी माँ है।
मैं उसे बचाऊँगा।।
अधिकाधिक पेड लगाऊँगा।
पृथ्वी माता को सजाऊँगा।।

कुशाग्र
नौवीं डी

# स्वच्छता पखवाड़ा

स्वच्छता पखवाड़ा भारत सरकार द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सफाई और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए एक पहल है।स्वच्छता पखवाड़ा का उद्देश्य देशभर में स्वच्छता को बढ़ावा देना है । इस अभियान के तहत ज्ञान भारती स्कूल में भी अलग-अलग गतिविधियां आयोजित की गई। इन गतिविधियों में विद्यार्थियों के साथ - साथ अध्यापकों ने भी भाग लेकर इसे सफ़ल बनाया।

Reactions of halo

Swachhata
hi Seva
Shot on OnePlus

# बच्चों की लेखनी

## कर का भार, न मानों भार

बिना करों की एक दुनिया का सपना बुने
जहाँ हर हाथ में मेहनत का पूरा ईनाम हो
हर ख्वाब में आज़ादी का पैगाम हो।

न हो हिसाब - किताब, न हो कोई भार,
हर इंसान के हिस्से में हो उसका एक संसार
सपनों की उड़ाने हों ऊँची - ऊँची
हर ख्वाब में बसी हो एक नई रौशनी ।

हर कदम पर हो बस विकास का निशान, सामाजिक भलाई बने हर इंसान का ईमान
सड़के चमचमाती; शिक्षा सबकी हो,
स्वास्थ्य और सुरक्षा की तिजोरी खुली हो।लेकिन क्या यह सभव है, सोचें एक बार,
हर व्यवस्था के बिना
कैसा होगा संसार ?

कर न हो तो सेवाएँ कैसे चलेंगी ?
सड़कों, अस्पतालों की ज़रूरते कहाँ से मिलेगी? हर सपने के लिए होता है एक आधार,
बिना जिम्मेदारी के जीवन जीवन हो सकता है बेकार।

पर ख्वाबों में, एक दुनिया बसाएँ हम,
जहाँ सुकून हो और मिले खुशी के कदम ।
बिना करो कि एक सच्ची मुस्कान
हर दिल में हो और हो खुशियों का जहान।

आद्या राजहंस
9th D

# स्कूल की पत्रिका,

आ गई है स्कूल की पत्रिका,
छा गई है स्कूल की पत्रिका।
बच्चों के दिल में समा गई पत्रिका,
हर जगह वह तो छा गई पत्रिका।

मेरो लेखन का सुधार होता,
जीवन का सुधार होता।
आ गई है स्कूल की पत्रिका,
छा गई है स्कूल की पत्रिका।

मेरा फोटो, आया है,
स्कूल की मैगजीन में छाया है।
दिल में ख़ुशियाँ लाया है,
दोस्तों को भी भाया है।

सहज खुराना
कक्षा- दसवीं 'डी'

## स्कूल ट्रिप का अनुभव : चैल यात्रा

21मई 2024 से 24 मई 2024 तक मैं अपने दोस्तों के साथ स्कूल ट्रिप पर चैल गई थी। यह यात्रा हमारे लिए रोमांचक और यादगार रही। पहले दिन हमने खूबसूरत घाटियों का दौरा किया। वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया।

दूसरे दिन हमनें वेली क्रॉसिंग की, जो एक अद्भुत अनुभव था। रस्सियों के सहारे घाटी को पार करना चुनौतीपूर्ण और रोमांचक था। उसके बाद हमनें जिपलाइन का आनंद लिया। हवा में तेज गति से उड़ते हुए घाटी को पार करना आद्वितीय अनुभव था। फिर हमारा कॉन्फिडेंस कोर्स था, जिसमें विभिन्न शारीरिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस कोर्स ने हमारे टीम वर्क और आत्मविश्वास को बढ़ाया।

तीसरे दिन हमनें लंबी पैदल यात्रा (हाइकिंग) की। पहाड़ों की ऊँचाइयों पर चढ़ते हुए हमने चैल की अद्वितीय सुंदरता को निहारा। चौथे दिन हमारा ज्यादातर समय यात्रा में ही बीता।

हमारे होटल में ठहरने की व्यवस्था बहुत ही आरामदायक थी और भोजन भी बेहद स्वादिष्ट था। रात में हम होटल में बहुत नाच-गाना करते थे और खूब आनंदित होते थे। इस यात्रा ने हमें न केवल प्राकृतिक सुंदरता का आनंद दिया बल्कि हमें आत्मनिर्भरता और टीम वर्क का महत्व भी सिखाया। यह ट्रिप मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक रहेगा।

अनुष्का मिश्रा
दसवीं 'डी'

# शूरवीर

मैं अपने आदर्श परमवीर चक्र विजेता, 'विक्रम बत्रा' का
सम्मान करता हूँ क्योंकि- भारत की इस पावन भूमि ने ऐसा
शुरवीर था पाया, कारगिल की जीत में, जिसने अपना लोहा
मनवाया है बर्फीली चोटियाँ और था संकीर्ण पठार, फिर भी
असंख्य घाव लिए रेंगते हुए स्वयं को आगे बढ़ाया।

लक्ष्य स्पष्ट था जहन में, बर्फीली वादियों में तिरंगा
लहराऊगा या फिर देश की खातिर तिरंगे में लिपटकर इस
माटी में समाऊगाँ। युवा पीढ़ी का कर पथ प्रदर्शन, वह दिखा
गया एक नई राह उनका शौर्य एवं वीरता अद्भुत थी, सही
अर्थों में थे 'शेरशाह' ।

उनके अदम्य साहस का, ना कोई सानी, ना कोई छोर पाया।
भारत की इस पावन भूमि ने ऐसा शूरवीर या पाय ...

शिवांग डागर

# निडर भारत की आवाज़

जब गूँज उठेगी नारी की आवाज़,
हर ख़ामोशी ढहाएगी दीवार का राज़।
आग में तपकर निकलेगी वो चिंगारी,
हर धड़कन में बहेगी, साहस की सवारी।

नारी की आँखों में चमकेगा नया सपना,
हर चुनौती के सामने, वो बनेगी एक सपना।

उसने देखा है अंधेरे में जलते हुए दीप,
हर हिम्मत से भरे दिल में उगेगा नये सवेरे की सीप।
निर्भया की गूँज अब न होगी बेकार,
हर आंसू की कहानी में बनेगा एक नया तार।

कोलकाता की आवाज़ें अब चुप न रहेंगी,
सड़कों पर चलकर, नई राहें हम चुनेंगी।
हर दर्द की गहराई में ढूँढेंगी एक राह,
हम मिलकर कहेंगे, "नारी है हमारी चाह।"

जो घर में बंधी थी, वो अब खुले आसमान में उड़ान,
हर दीवार को तोड़ेंगी, हर बंधन को करेंगी पहचान।
शक्ति के इस महासंग्राम में सब एकजुट होंगे,
नारी का ये साहस, नई कहानी बुनेंगे।

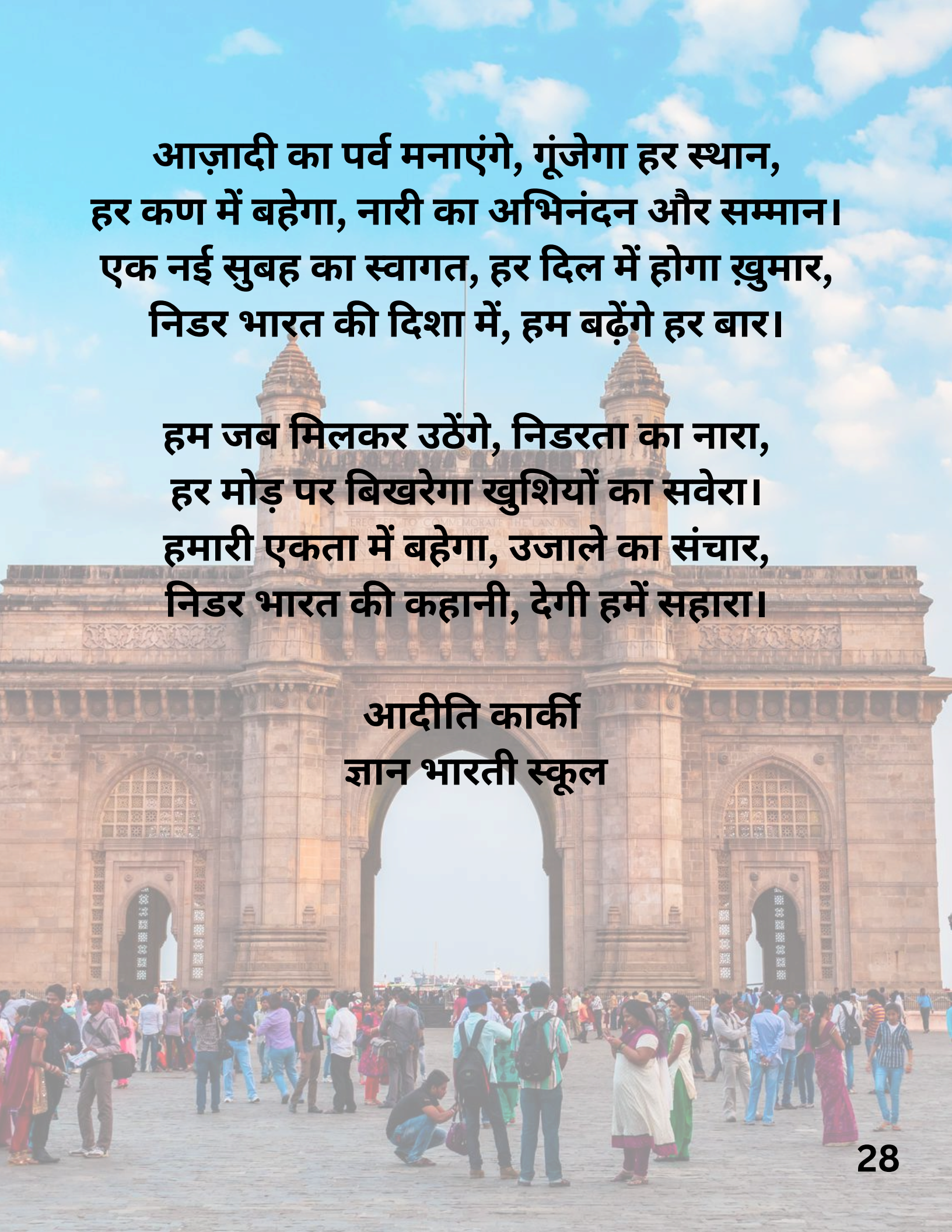

आज़ादी का पर्व मनाएंगे, गूंजेगा हर स्थान,
हर कण में बहेगा, नारी का अभिनंदन और सम्मान।
एक नई सुबह का स्वागत, हर दिल में होगा ख़ुमार,
निडर भारत की दिशा में, हम बढ़ेंगे हर बार।

हम जब मिलकर उठेंगे, निडरता का नारा,
हर मोड़ पर बिखरेगा खुशियों का सवेरा।
हमारी एकता में बहेगा, उजाले का संचार,
निडर भारत की कहानी, देगी हमें सहारा।

आदीति कार्की
ज्ञान भारती स्कूल

## सोशल मीडिया एक शिक्षण उपकरण के रूप में

मनुष्य के लिए सीखना सदैव एक निरन्तर प्रक्रिया रही है। समय के साथ सीखने के तरीके और ज़रूरतें बदल गई हैं। ऐसा ही एक नया बदलाव सोशल मीडिया लेकर आया है। सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। हम कई चीजों के लिए इस पर भरोसा करते हैं, उदाहरण के लिए विज्ञापन, मनोरंजन, अपने दोस्तों तक पहुंचना आदि। लेकिन एक चीज है जिसके लिए हम शायद कभी सोशल मीडिया का उपयोग नहीं करते हैं, वह है शिक्षा। आम धारणा के विपरीत सोशल मीडिया एक उत्कृष्ट शिक्षण उपकरण है और यह हमारी सीखने की तकनीकों को उन्नत और आगे बढ़ाने में मदद कर सकता है और हमें बेहतर परिणाम प्राप्त करने में मदद कर सकता है। सोशल मीडिया ज्ञान के आदान-प्रदान का एक अच्छा साधन है। छात्र मुख्य रूप से पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने, समझने, संयुक्त निर्णय लेने या शिक्षण सामग्री साझा करने के लिए ऑनलाइन समुदायों और समूहों का उपयोग करते हैं। शिक्षक क्विज़, फ्लैशकार्ड, वीडियो और यहां तक कि ब्लॉग जैसे ऑनलाइन शिक्षण के रचनात्मक और मजेदार तरीकों का उपयोग करके भी छात्रों की मदद करते हैं। इससे सीमाओं के पार लोगों तक पहुंचने में भी मदद मिली है। चूंकि सोशल मीडिया मुख्य रूप से डिजिटल या ऑनलाइन है, इसलिए दुनिया के विभिन्न कोनों से छात्र और शिक्षक आसानी से ऑनलाइन जुड़ पाते हैं और गहन चर्चा कर पाते हैं। स्ट्रीम, लाइव्स, सेमिनार और वेबिनार सोशल मीडिया के महान उदाहरण हैं जो हमें जनता तक पहुंचने में मदद करते हैं| यह ऐसे कई बच्चों की भी मदद करता है जो व्यक्तिगत या व्यावसायिक कारणों से शारीरिक रूप से स्कूल जाने में असमर्थ हैं। ऑनलाइन शिक्षा उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच बनाने में मदद करती है। कुछ अनुसंधान के अनुसार, सोशल मीडिया के छात्रों के लिए कई फायदे हैं जैसे- बेहतर प्रबंधन, आलोचनात्मक सोच, सहयोग, रचनात्मकता आदि को बढ़ावा देना। यहां तक कि शर्मीले और अंतर्मुखी छात्र और शिक्षक भी इस नए परिवर्तन के कारण अपने विचारों को खुलकर व्यक्त करने में सक्षम हैं। बहुत से लोग सोचते हैं कि सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक नकारात्मक पहलू है और यह बूढ़े और जवान दोनों लोगों को समान रूप से भ्रष्ट कर रहा है। लेकिन यह सच नहीं है, अगर सही तरीके से उपयोग किया जाए तो सोशल मीडिया हमारी शिक्षा में एक प्रभावी योगदान है और हमारी मदद कर सकता है।

इसका वास्तविक जीवन का एक बड़ा उदाहरण कोरोना महामारी थी। पहले लोगों ने सोचा कि महामारी हमारे रोजमर्रा के जीवन को रोक देगी, और हम अपनी शिक्षा और काम पहले की तरह जारी नहीं रख पाएंगे। लेकिन सोशल मीडिया, विशेष रूप से ऑनलाइन कक्षाओं ने हमारे लिए एक विकल्प प्रदान किया। इससे पता चलता है कि सोशल मीडिया सीखने का एक अच्छा साधन है। और प्रौ तकनीकी पर लोगों की बढ़ती निर्भरता में, सोशल मीडिया हमारे लिए एक वरदान है। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे शिक्षक छात्रों को उनकी सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाने और रचनात्मक तरीके से अपनी पढ़ाई का आनंद लेने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षक चर्चा के लिए ऑनलाइन समूह बना सकते हैं, वे प्रेजेंटेशन साइट बना सकते हैं जिसमें छात्र अपनी बहुमूल्य राय डाल सकते हैं, वे वीडियो, मीम्स, गाने और रैप बनाने के लिए सोशल मीडिया ऐप्स का उपयोग कर सकते हैं जो छात्रों को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकते हैं। वे अपने उत्तरों की जांच के लिए ऑनलाइन साइटों का भी उपयोग कर सकते हैं। वे अपने उत्तरों की जांच के लिए ऑनलाइन साइटों का भी उपयोग कर सकते हैं और वे अपने विषयों को बेहतर ढंग से समझने के लिए यूट्यूब और इंस्टाग्राम वीडियो का भी उपयोग कर सकते हैं | शिक्षक और छात्र दोनों इसका उपयोग अपने कार्य को बेहतर बनाने के लिए कर सकते हैं | उपर्युक्त बिंदुओं से हम समझ सकते हैं कि अगर सही तरीके से उपयोग किया जाए तो सोशल मीडिया एक बेहतरीन शिक्षण उपकरण है। आइए सुनिश्चित करें कि हम सोशल मीडिया का दुरुपयोग नहीं करेंगे और इसका उपयोग केवल अपने लाभ के लिए करेंगे |

-आद्या श्रीवास्तव, S2-D

# लोक-कथा : आकाश में महल -

राजा को बुद्धिमान दरबारी नियुक्त करना था।....

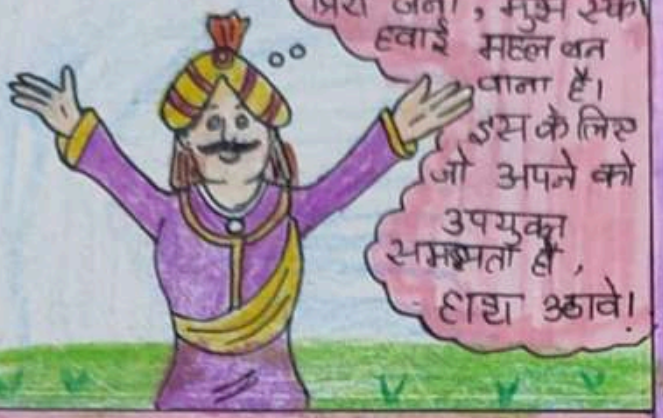


सिर्फ गोनू झा ने हाथ उठाया।...

गोनू झा ने कार्य पूरा करने के लिए ४ महीने का समय माँगा।.... सभी प्रजा ४ महीने बाद जगह पर पहुँच गये।...

1) वक्त पर सोना चाहिए
2) हमें बड़े का आदर करना चाहिए
144
सही तरीके से
उपयोग किया जाए तो
सोशल मीडिया
एक वरदान है

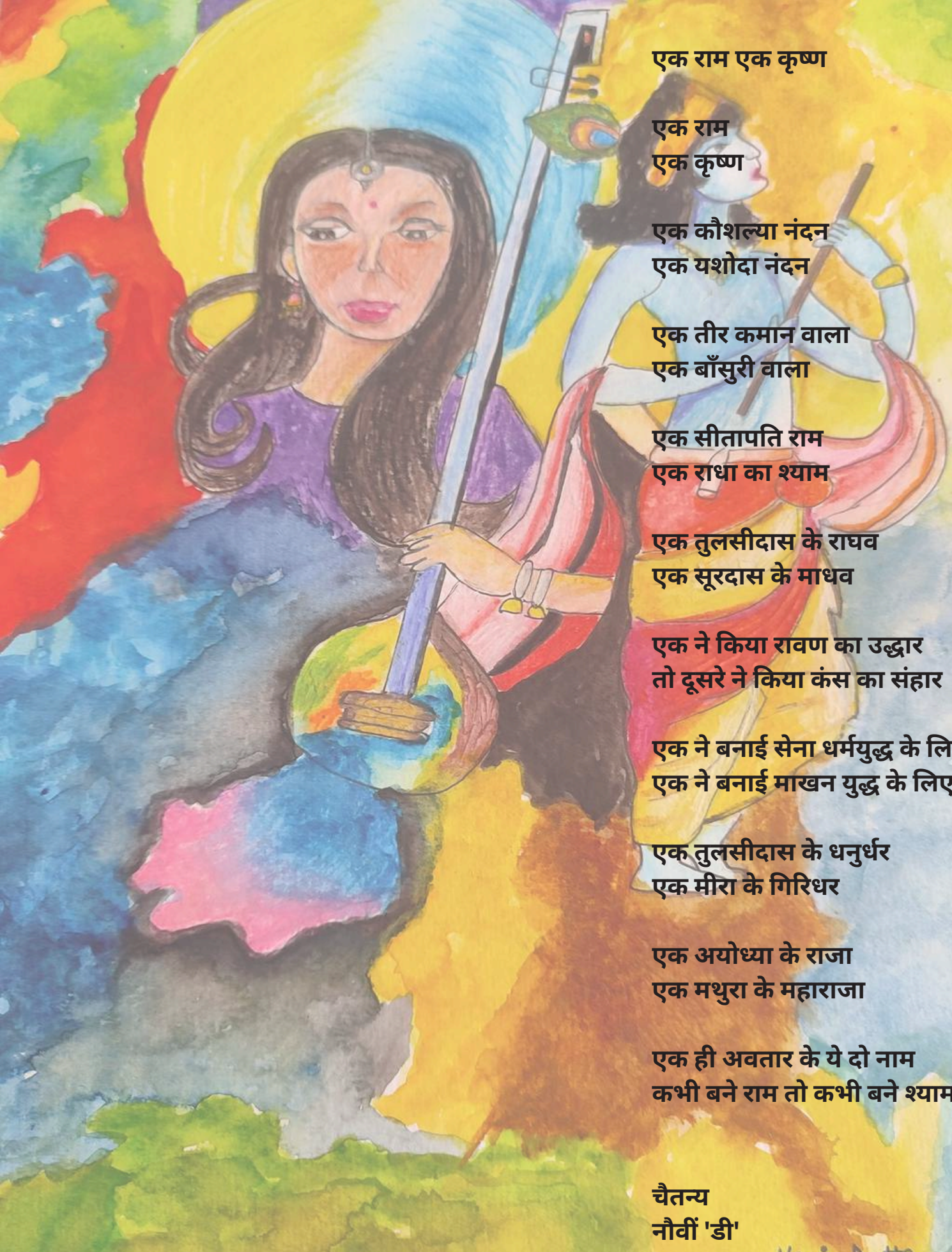

## एक राम एक कृष्ण

एक राम
एक कृष्ण

एक कौशल्या नंदन
एक यशोदा नंदन

एक तीर कमान वाला
एक बाँसुरी वाला

एक सीतापति राम
एक राधा का श्याम

एक तुलसीदास के राघव
एक सूरदास के माधव

एक ने किया रावण का उद्धार
तो दूसरे ने किया कंस का संहार

एक ने बनाई सेना धर्मयुद्ध के लिए
एक ने बनाई माखन युद्ध के लिए

एक तुलसीदास के धनुर्धर
एक मीरा के गिरिधर

एक अयोध्या के राजा
एक मथुरा के महाराजा

एक ही अवतार के ये दो नाम
कभी बने राम तो कभी बने श्याम।

चैतन्य
नौवीं 'डी'

Vani Dutta
S2B

# अध्यापक की कलम से

# फिजिक्स टीचर की अनथक यात्रा

तीन दशकों से मिस्टर झा , फिजिक्स टीचर एक अभूतपूर्व  मिशन पर हैं —कक्षा ग्यारह के फिजिक्स विषय  के औसत अंकों को ऊपर उठाना। यह सुनने में बहुत  साधारण लगता है लेकिन अगर आप उनसे पूछें, तो यह चंद्रयान या मंगलयान के अंतरग्रहीय मिशन से भी ज़्यादा चुनौतीपूर्ण है।
मिस्टर झा  ने एक योजना बनाई, महत्वाकांक्षी परन्तु विरोधाभासी। छात्रों को औसत सामग्री पढ़ाकर औसत अंक बढ़ाना।
अब मिस्टर झा  को महाभारत के अर्जुन के रूप में सोचिए, थोड़ा आधुनिक ट्विस्ट के साथ। उन्हें पेड़ पर बैठी एक चिड़िया को नहीं , एक पेड़ पर बहुत सारी  चिड़ियों की औसत स्थिति पर निशाना लगाना है और सारी  चिड़ियों को मारना है। इस  विचित्र स्थिति में औसत स्थान एक भूतिया ज़ोन है , जो हमेशा पहुंच से बाहर है । उनकी क्लास में औसत छात्र उतने ही दुर्लभ होते हैं, जैसे फिजिक्स लैब में यूनिकॉर्न। उनके छात्र दो श्रेणियों में बंटे होते हैं — एक ओर "उत्कृष्ट" छात्र होते हैं जो हमारे लाख ट्यूशन क्लासेज कैंसिल कराने के बावजूद आई आई टी में निकल जाते हैं  और दूसरे वो जिनके मम्मी पापा उनके ग्यारहवीं में साइंस मिलने पर ही पड़ोस में लड्डू बाँट देते हैं।  पहली श्रेणी के छात्रों को औसत सामग्री ऊबाऊ लगती है, और दूसरी को प्राचीन हाइरोग्लिफ़िक्स।

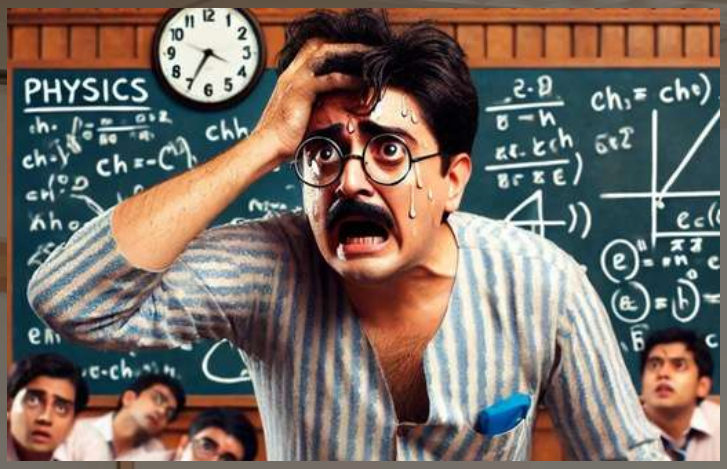


रणनीति बदली जाती है। मिस्टर झा ने निर्णय लिया कि वह अब कमज़ोर छात्रों पर ध्यान देंगे, ताकि उन्हें सुधार कर के क्लास का औसत सुधार सके। लेकिन यह कदम तो एक और आपदा में बदल जाता है। जैसे ही उन्होंने सामग्री को आसान बनाया, वैसे ही उत्कृष्ट छात्र, जिन्हें पहले ही औसत सामग्री से ऊब हो चुकी थी, अब क्लास में सोने लगे। उनके अंक गिरने लगे, दूसरी ओर, कमज़ोर छात्र थोड़े बहुत सुधरे, लेकिन वे अब भी कहीं न कहीं औसत से नीचे ही थे। औसत वही का वही रहता है, और ऊपर नहीं उठता।

अब एक ही रास्ता बचता है। एक एक को टारगेट करना। हमेशा क्रिकेट खेलने वाले को क्रिकेट छोड़कर, गायक को गायकी छोड़कर केवल फिजिक्स पर ध्यान देने का फरमान। नतीजा ? क्रिकेट में उसका प्रदर्शन गिर गया, गायक के सुर भी बिगड़ने लगे। फिजिक्स के अंक थोड़ा बढ़े, लेकिन वो भी मात्र औसत से थोड़ा ऊपर। क्रिकेट और गायकी के सुपरस्टार औसत फिजिक्स छात्र बन गए।

मिस्टर झा उसी हिरण की तरह हो गए हैं, जिसे वह अपने ऑप्टिक्स के पाठों में हमेशा बताते थे — जो मृगमरीचिका का पीछा कर रहा है, अपने ही पाठों की रेगिस्तान मे

एक साल की निरंतर मेहनत के बाद, मिस्टर झा ने गर्व से कक्षा का औसत निकाला। 55% मजे की बात यह है कि एक भी छात्र के बिल्कुल 55% नंबर नहीं आये। आधे छात्र औसत से नीचे और आधे ऊपर। पूरा ब्रह्मांड ही उनके औसत के मिशन पर एक विराट हास्य कर रहा था।

"पता नहीं कौन सी घडी में फिजिक्स टीचर बनने का निर्णय लिया था। अंग्रेजी, हिंदी दुनिया भर के विषय हैं जहाँ पास फेल की सोचनी ही नहीं होती। हर साल रिजल्ट आने से पहले ब्लड प्रेशर तो नहीं बढ़ता होगा।" सिर पर हाथ रखकर यही विचार दिमाग में आ रहे थे। “नहीं, फिजिक्स टीचर की बात अलग ही होती है।“

अपने क्लासरूम में बच्चो को मोटीवेट कराने वाले लेक्टर्स याद आने लगते हैं। कभी-कभी, यात्रा की अराजकता को अपनाना और उसके विचित्रताओं को समझना, सबसे महत्वपूर्ण पाठ हो सकता है। शायद अगले साल, औसत कहीं न कहीं औसत से ऊपर होगा।

**संजय भारद्वाज**
**उपप्रधानाचार्य**

# जीवन में गुरु की महत्ता

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान पूज्य तथा पावन समझा जाता है। कानों में गुरु शब्द के पड़ते ही अंत:करण में एक विशाल व्यक्तित्वमयी मूर्ति अंकित हो जाती है और हृदय से श्रद्धा भक्ति ओर अनुराग की वह रसयुक्त त्रिवेणी प्रवाहित हो उठती है, जो संपूर्ण बुराइयों को धोकर हृदय में अपूर्व शांति को भर देती है। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ गुरु की व्याप्ति न पाई जाती हो क्योंकि बिना गुरुकृपा एवं मार्गदर्शन के व्यक्ति की उन्नति संभव नहीं है और व्यक्ति पर ही समाज का अस्तित्व निर्भर है। अतएव समाज में गुरु का स्थान अत्यंत ऊँचा समझा जाता है और पूज्य की दृष्टि से देखा जाता है। भारतीय विद्वानों ने पाँच प्रकार के गुरुओं का निर्देश किया है :–

*"यो भावयति या सूते येन विद्योपदिश्यते।*
*ज्येष्ठ भ्राता च भर्ता च पञ्चैते गुरुव: स्मृता।।"*

अर्थात जनक, जननी, विद्योपदेशक, ज्येष्ठ भ्राता तथा पति ये पाँचों गुरु हैं। इन पाँचों गुरुओं का समाज में विशिष्ठ स्थान होता है, परंतु आजकल 'गुरु' शब्द विद्योपदेशक या शिक्षक के लिए रूढ़ सा हो गया है। यह शब्द विद्या पढ़ाने या सिखाने के लिए ही सामान्य रूप में प्रयोग किया जाने लगा है। इसके अतिरिक्त 'शतपथ ब्राह्मण' में कहा गया है–

*"मातृमान पितृमान आचार्यवान् पुरुषोवेद"*

अर्थात मनुष्य का प्रथम गुरु 'माता' दूसरा 'पिता' तथा तीसरा 'आचार्य' है। इन तीनों उत्तम गुरुओं या शिक्षकों के होने से मनुष्य ज्ञानवान बनता है। वैसे तो जन्मदाता होने के नाते माता-पिता का स्थान सर्वोत्कृष्ट है, फिर भी कुछ अंशों में गुरु का महत्व इनसे भी आगे बढ़ जाता है, क्योंकि माता-पिता के द्वारा बालक को शरीर अवश्य मिलता है परंतु ज्ञान की प्राप्ति उसे गुरु के द्वारा ही होती है। ज्ञान मानव जीवन की सार वस्तु है। कहा भी गया है– "ज्ञानाद् ऋते न मुक्ति:" अर्थात ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं या इस प्रकार कह लीजिए कि ज्ञान के बिना मनुष्य साक्षात पशु के समान है। अत: मानव को पशुकोटि से अलग कर इंसानियत का भाव पैदा करने वाला 'गुरु' ही है इसलिए शास्त्रकारों ने हमेशा उच्च स्वर में घोषणा की है–

*"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।*
*गुरु: साक्षात् परब्रह्मा, तस्मै श्री गुरुवे नम:।।"*

भारतीय विद्वानों ने अपने ग्रंथों में स्थान-स्थान पर गुरु की प्रशंसा की है। उनकी दृष्टि में गहन अज्ञान रूपी अंधकार से युक्त, ज्ञानमार्ग से विमुख मानव का आश्रय एकमात्र गुरु ही है, जो अपने ज्ञानदीप के दिव्यलोक से संपूर्ण अज्ञानरूपी अंधकार को नष्ट कर उसे सही दिशा प्रदान करता है, इसलिए महाभारत में कहा गया है–

*"अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया,*
*चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नम:।"*

अर्थात जो अज्ञान से बंद आँखों में ज्ञान का प्रकाश भर दें, उस गुरुदेव को नमस्कार है। संसार में तीन ऋण बड़े माने गए हैं – पितृ ऋण, मातृ ऋण तथा गुरु ऋण ।

*पृथित्वां नास्ति तदद्रव्यं यः दत्वा त्वनृणी भवेत्।"*

अर्थात यदि गुरु ने शिष्य को एक अक्षर भी सिखाया है तो उसके लिए पृथ्वी पर कोई ऐसा द्रव्य नहीं है जिसे देकर शिष्य गुरु के ऋण से ऋणमुक्त हो सके।

सुप्रसिद्ध स्मृतिकार महाराज 'मनु' के विचार से समस्त लौकिक एवं पारलौकिक सुखों की उपलब्धि का साधन एकमात्र 'गुरु की सेवा' ही है। उनकी मान्यता है कि गुरु की सेवा से ही ब्रह्मलोक की प्राप्ति भी सहज हो जाती हे। कहा भी गया है–

*"गुरुशुश्रूषया च एवं ब्रह्मलोक समश्नुते"*

अतः मन, वाणी तथा कर्म से गुरु की सेवा शुश्रूषा तथा आदर सत्कार करना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार जिज्ञासु के लिए 'गुरु की सेवा' ही सर्वस्व है। विद्या प्राप्ति गुरु की सेवा से ही हो सकती है। इसलिए पूरी श्रद्धाभक्ति के साथ गुरु की सेवा करनी चाहिए, क्योंकि श्रद्धाहीन क्रियाएँ प्रायः निष्फल होती है। श्रद्धा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। भगवान श्री कृष्ण गीता में उपदेश देते हुए कहते हैं –

*"श्रद्धावान लभते ज्ञानम्"* अर्थात श्रद्धावान ही ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है।

एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य की मृण्मयी अर्थात मिट्टी से बनी प्रतिमा से धनुर्विद्या में वह अपूर्व कौशल प्राप्त कर लिया था जिसे देख स्वयं आचार्य द्रोण भी आश्चर्यचकित रह गए थे।

इस प्रकार प्राचीन विद्वानों ने गुरु की महिमा की भुरि-भुरि प्रशंसा की है। सिद्धांत रूप में ही नहीं अपितु व्यवहार में भी समाज में गुरु का मूर्धन्य स्थान रहा है। विद्यार्थी गुरु के समक्ष भगवान को हेय समझता था। भले ही वह किसी सामंत या सम्राट का राजकुमार हो, पर गुरु के आश्रम में उसे सामान्य बटु की भाँति ही जीवन बिताना पड़ता था। साथ ही बड़ी श्रद्धा तथा भक्ति के साथ गुरु का गृहकार्य भी किया करता था जैसे कृषि-कार्य, गोचारण आदि। पूजा के निमित जल, पुष्प, कुश समिधा तथा फल-फूल लाकर गुरु के सामने उपस्थित करना तो उसका नित्य का अनिवार्य कार्य ही होता था। वह गुरु के सामने इतना श्रद्धालु तथा विनीत रहता था कि गुरु की पादुका, छाता, आसन आदि का उपयोग करना महापाप समझता था। आचार्य भी शिष्य को धर्म, नीति, सदाचार, गणित, आयुर्वेद, संगीत आदि विद्याओं की शिक्षा देता था। किंतु दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आज गुरु शिष्य के वे मधुर संबंध कुछ टूट रहे हैं और उनमें नीरसता-सी छायी जा रही है। आज न तो वे सेवानिष्ठ आदर्श शिष्य रहे और न ही वैसे महनीय तपोनिष्ठ आचार्य। कहाँ हैं राम, कृष्ण, आरूणि, कौत्स और एकलव्य जैसे एकनिष्ठ गुरुभक्त और कहाँ हैं गौतम, वशिष्ठ, धौम्य तथा वरतंतु जैसे हमारे पूज्य गुरुवर। दोनों पक्षों में ही ह्रास बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है।

अतः अब हम पुनः भारत को सुसंस्कृत व संस्कारवान बनाना चाहते हैं, अपनी संस्कृति व संस्कारों को बचाना चाहते हैं और विश्व में वही मूर्धन्य आसन ग्रहण करना चाहते तो गुरु और शिष्य के पावन संबंधों को और प्रागाढ़ बनाना होगा और उनमें वही भक्ति, वही शक्ति और वही अनुरक्ति भरनी होगी, तभी देश को सत्यं-शिवं-सुदरम् का सच्चा साक्षात्कार होगा।

सचिन कुमार शास्त्री
अध्यापक हिंदी विभाग

## शहीदों की सदी मनाएँ, चलकर चौरी चौरा में

4 फरवरी 1922 की ये घटना बड़ी पुरानी है
चौरी चौरा कांड की आज, सुनानी हमें कहानी है।।
सह सहकर गोरे तानाशाहों के सारे अत्याचार
गाँधी जी ने किया असहयोग आंदोलन करने का विचार
गाँव गाँव और शहर-शहर शुरु हुआ विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार
और ज़ोर पकड़ने लगा स्वदेशी का प्रचार
वीर प्रसविनी भारत माता के गरिमामयी इतिहास को ले हम जान
गोरखपुर जिले के एक गाँव में, चौरी चौरा था जिसका नाम
अंग्रेज़ो के ख़िलाफ़, जोश में भर गई सारी आवाम
जोशीली जनता पर पुलिस ने जमकर बरसाई गोलियाँ
बेकाबू होती भीड़ ने तब, कानून को अपने हाथों में ले लिया
विद्रोह की ज्वाला ऐसी भड़की ,थाने में पुलिस के लगा दी आग
पुलिस के बाइस जवान ,जलकर हो गए ख़ाक
इस अप्रत्याशित घटना से,गाँधी जी ने आंदोलन छोड़ दिया
इस हृदयविदारक दृश्य ने उनके दिल को था तोड़ दिया
चौरी चौरा कांड से बापू को लगा था जो आघात
असहयोग आंदोलन को वापस लेने की कर डाली बात
देकर अपना रक्त जिन्होंने भारत को सम्मान दिया
बलिदान स्वयं का देकर के भारत माता को मान दिया
उन अमर शहीदों को नतमस्तक हो शीश झुकाएँ,चलकर चौरी चौरा में
आओ मिलकर सब सदी मनाएँ चलकर चौरी चौरा में
इसी धर्मयुद्ध की सदी मनाएँ चलकर चौरी चौरा में
मिलकर चौरी चौरा में.....

त्रिनु मैडम (शिक्षिका : इतिहास)

## भी क्या दिन थे

जहा डर फिक्र और गम नहीं थे
कभी कभी किताबों से जी चुराते थे
और दोस्तों के संग यूँ ही  बिन बात मुस्कुराते थे
आखिरी बेंच तक लंच बॉक्स कब पहुँच जाता था,
लंच टाइम तक खाली होकर कैसे आता था?
गेम्स पीरियड के इंतजार में मैथ्स की क्लास निकालते थे
फिर टेस्ट की टेंशन में गेम्स पीरियड।
काग़ज़ के टुकड़ों पर लिखा करते थे मन की बात
पर होमवर्क करना नही रहता था याद।
पिकनिक के ज़िक्र से ही ख्यालों के महल बनने लगते थे
और बस में अंताक्षरी के नाम से ही सब खिलखिला उठते थे
टीचर के आने से पहले होमवर्क कॉपी करते थे
और अपने साथी को चुपके से डाँट से बचा लिया करते थे
स्कूल की आखिरी घंटी बजने के इंतज़ार में होते थे बेचैन
और घर पहुँचने से पहले खेलने का बन जाता था प्लान।
एग्जाम के शुरू होते ही, ख्याल आते थे
एग्जाम ख़तम होते ही कहाँ जाएँगे,
और कैसे हम अपने दिन बिताएँगे
आज भी सब वही है,
बस फर्क इतना है कि आज बचपन नहीं है।

**सिमरन भाटिया ( अध्यापिका:गणित विभाग)**

बातें बड़े काम की

सफलता कैसे मिले?

- जीवन में यदि हमें आते बढ़ना है और सफल होना है, तो हमें अपने जीवन में कुछ बातों को महत्व देना होगा।

- यदि हम जीवन में कुछ बेहतर पाना या करना चाहते हैं तो हमें समय का पूरा ध्यान रखना होगा। अपने समय का सचेत व सावधान रहकर सदुपयोग करना, जीवन की सफलता का मूलमंत्र है।

- भविष्य की योजना बनाएँ परंतु विश्वास वर्तमान पर करें क्योंकि वर्तमान ही जीवन की सच्चाई है। अतीत बीत गया है, भविष्य अभी आया नहीं है इसलिए इनके विषय में सोचना समय व्यर्थ गँवाना है। अतः वर्तमान ही जीवन का सत्य है, उसे सँवारें।

अपना हर कदम लक्ष्य की ओर बढ़ाएँ। लक्ष्य में आने वाली बाधाओं को दूर करते चलें। अपने लक्ष्य को लेकर मन में किसी प्रकार का संदेह नहीं होना चाहिए अन्यथा लक्ष्य पाना मुश्किल हो जाएगा।

- लक्ष्य पाने के लिए एक रणनीति (योजना) बनानी चाहिए और उस पर पूर्ण विश्वास करके आगे बढ़ना चाहिए।समय-समय पर अपने आपको जाँचते रहना चाहिए। अपनी कोशिशों और प्रयासों क आकलन करते रहना चाहिए और कभी भी स्वयं को दूसरों से कम नहीं समझना चाहिए। हमें क्रोध से बचना चाहिए क्योंकि क्रोध सारे विनाश की जड़ होता है। यह हमें हमारे लक से भटका सकता है।
- समय किसी का इंतजार नहीं करता, इसलिए इसे व्यर्थ न गवाएँ। समय का सही उपयोग करना सीखें, बेकार के कार्यों में समय बर्बाद न करें। सकारात्मक नजरिया अपनाएँ।

- अपने खाली समय में कुछ रचनात्मक करें।अपनी प्रतिभा को पहचानकर उसे निखारने का प्रयत्न करें। हमें बेकार के वाद-विवाद, आरोप-प्रत्यारोप से बचना चाहिए।
- अपनी सोच का विस्तार करें। मन में उपजी कल्पनाओं और भावनाओं को अपनों के साथ बाँटें और उनसे सलाह लें परंतु बाहरी एवं अनावश्यक लोगों के दखल से स्वयं को बचाएँ।

भावी जीवन में सफलता पाने के लिए मनुष्य का सभ्य होना बहुत जरूरी है।
अर्चना तरार

‘सपनों की ऊँचाइयाँ वही छूते हैं, जिनके पंख मेहनत, हौसले और शिक्षा से बने होते हैं। चुनौतियाँ आएँगी, पर जो अपने लक्ष्य पर अडिग रहते हैं और ज्ञान को मार्गदर्शक बनाते हैं, वही सफलता पाते हैं।’

# धन्यवाद

अध्यापिका : अर्चना तरार मैडम

एडिटर : शिवांग डागर